



(ब) ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

५

(१) “यह झूठ है। बाबू साहब के ऐसा धर्मात्मा तो कोई है ही नहीं। कितनी विधवाएँ उनकी दी हुई धोती से अपना तन ढकती हैं। कितनी लड़कियों की ब्याह-शादी होती है। कितने सताये हुए लोगों की उनके द्वारा रक्षा होती है।”

अथवा

(१) “ओ अम्मी! तुमने तो आज रंग ला दिया!....साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि छोटी-सी काया सिमटकर बेटे के आलिंगन में छिप गयीं।”

(क) किन्हीं चार वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :

४

- (१) यहाँ मुफ्त दवाइयाँ मिलती हैं।
- (२) मेरा दोस्त का पिताजी डॉक्टर है।
- (३) वह पिताजी को मिला।
- (४) यह रमा की गुड़ियाँ है।
- (५) हम हमारे देश की रक्षा करेंगे।
- (६) उनकी हिन्दी मातृभाषा नहीं थी।

४ (अ) विनोद पुस्तक मंदिर आगरा की ओर से किताबों का पार्सल मिला है, जिसमें कुछ किताबें कम मिली हैं, उसकी शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।

८

अथवा

(अ) डीमार्ट-डिपार्टमेन्टल स्टोर्स-बड़ौदा, अपना एक ओर डिपार्टमेन्टल स्टोर्स शुरू कर रहे हैं। इस संबंध में अपने ग्राहकों को सूचित करते हुए परिपत्र लिखिए।

(ब) सोनी इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी, नोइडा से विभिन्न मॉडल के कम्प्यूटर संबंधी मूल्यसूचि मांगते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

(ब) न्यू सिविल होस्पिटल, अहमदाबाद की ओर से केडीला फार्मास्यूटीकल कंपनी, बम्बई को दवाइयाँ भेजने को आदेश देते हुए पत्र लिखिए।

५ (अ) नर्मदा विद्यालय, भरूच में हिन्दी शिक्षक का स्थान रिक्त हैं। आप अपना आवेदन-पत्र भेजिए।

अथवा

(अ) गणेश सुगर प्रा.लि. कंपनी की असाधारण सभा का कार्य-विवरण-नोंध तैयार कीजिए।

(ब) निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में से किन्हीं आठ के पारिभाषिक रूप लिखिए:

- (१) – Amount
- (२) – Budget
- (३) – Cash
- (४) – Deposit
- (५) – Export
- (६) – Loan
- (७) – Manager
- (८) – Finance
- (९) – Instalment
- (१०) – Fund

(क) निम्नलिखित गद्यांश का एक तिहाई में संक्षेपण करते हुए, उसे उचित शीर्षक दीजिए।

“वृक्ष ही जल है, जल रोटी है और रोटी ही जीवन है।” ये वाक्य नग्न सत्य हैं! आज सभी भारतीय हृदयों में असंतोष भरा है, क्योंकि हमारे पास खाने को अन्न नहीं। हमारे पास अन्न नहीं, क्योंकि पानी संग्रह करने की पुरानी पद्धति हम हस्तगत नहीं कर सके।

हमारे पास पानी नहीं है। वर्षा अनिश्चित है, क्योंकि हम तरु महिमा भूल गए हैं। हजारों वर्ष तक हम जीवित रहे; लेकिन हमारी दृष्टि संकुचित हो गई, हम नये से बन गए। तरुमहिमा की हमको परवाह नहीं रही। वृक्षों को हम काटने लगे। वृक्षा रोपण एक फैशन बन गया है, परंतु इसमें धार्मिक श्रद्धा का तत्त्व था वह चला गया।”